



इलाज में मरीज की मर्जी और गरिमा का सम्मान भी जरूरी

🕒 विश्व बायोएथिक्स दिवस पर एरा विश्वविद्यालय में हुआ कार्यक्रम

लखनऊ (सं)। मरीज का इलाज सिर्फ बीमारी दूर करने तक सीमित नहीं है। उसकी सहमति, निजता, सम्मान और आर्थिक-सामाजिक स्थिति का ध्यान रखना भी डॉक्टर की जिम्मेदारी है। चिकित्सा में तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल के बीच मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का संदेश शुक्रवार को एरा यूनिवर्सिटी में दिया गया। यहां विश्व बायोएथिक्स दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने मरीजों के अधिकारों और निष्पक्ष स्वास्थ्य सेवाओं पर चर्चा की।

यूनिवर्सिटी की बायोएथिक्स यूनिट की ओर से आयोजित कार्यक्रम की थीम 'शांति के लिए बायोएथिक्स' रही। कुलपति प्रो. अब्बास अली महदी ने कहा कि समानता, पारदर्शिता और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित स्वास्थ्य व्यवस्था सामाजिक न्याय के लिए जरूरी है। प्रो-वाइस चांसलर प्रो. फरजाना महदी ने चिकित्सकों से रोजमर्रा के इलाज में संवेदनशीलता, ईमानदारी व मरीज की स्वायत्तता



को प्राथमिकता देने की अपील की। प्रिंसिपल एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. जमाल मसूद ने अस्पतालों में मरीजों के अधिकारों की रक्षा को संस्थागत जिम्मेदारी बताया।

बायोएथिक्स यूनिट की प्रमुख डॉ. अनुजा भार्गव ने कहा कि कमजोर और वंचित वर्गों को बिना भेदभाव बेहतर चिकित्सा उपलब्ध कराना सामुदायिक कल्याण के लिए अहम है। मुख्य अतिथि

डॉ. शब्बीर अमानुल्लाह ने चिकित्सा से जुड़ी नैतिक दुविधाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल के साथ मानवीय गरिमा का संतुलन बनाए रखना जरूरी है। कार्यक्रम में बायोएथिक्स यूनिट की सचिव डॉ. सीमा सिंह ने संस्थागत गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अगस्त में आयोजित प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।